(IJDSSH) 2017, Vol. No. 4, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5142; p-ISSN: 2455-7730**

NATURE AND ENVIRONMENT ILLUSTRATION IN THE LITERATURE OF TULSIDAS

Dr Ranjeet Kaur
Associate Professor, Department of Education, Khunkhunji Girls' Degree College, Lucknow

तुलसीदास के साहित्य में प्रकृति एवं पर्यावरण–चित्रण

डॉ0 रंजीत कौर
एसोसिएट प्रोफेसर
शिक्षा–विभाग
खुनखुन जी गर्ल्स डिग्री कॉलेज, लखनऊ

प्रकृति–चित्रण भारतीय साहित्य की प्रमुख विशेषता है। चूंकि साहित्य का मूल आलम्बन मानव है और प्राकृतिक परिवेश से पृथक् रहकर मानव का अस्तित्व सम्भव नहीं है, इसलिए साहित्य में प्रकृति–चित्रण की महत्ता स्वीकार की गई है। तुलसी–साहित्य में प्रकृति या पर्यावरण का अध्ययन करते समय हम यह पाते हैं कि इन्होंने जहाँ मानव और प्रकृति के अभेद्य सम्बन्ध को महत्वपूर्ण माना है, वहीं प्रकृति का चित्रण प्रायः दो रूपों में मिलता है – अलंकृत रूप में तथा उपदेशक रूप में। अर्थात् गोस्वामी जी ने प्रकृति का चित्रण करते हुए भी उसके शिक्षिका रूप की महत्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत की है। यहाँ इस विषय को कुछ शीर्ष बिन्दुओं के आधार पर प्रस्तुत किया जा रहा है :–

(क) <u>विभिन्न प्राकृतिक परिवेश एवं मानव–जीवन</u>: *तुलसी साहित्य में पर्वतो, वनों, नगरों, पठारों तथा समुद्रतटीय अनेक प्राकृतिक परिवेशों का वर्णन किया गया है और वहाँ के मानव–जीवन को उस परिवेश के साथ अनुकूलित भी निरूपित किया है, जैसे – पर्वत पर रहने वाले लोगों की कष्ट सहिष्णुता, वन में निवास*

(IJDSSH) 2017, Vol. No. 4, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5142; p-ISSN: 2455-7730**

करने वाले लोगों का जीवन संघर्ष, उनका स्वभाव, उनकी अशिक्षा, क्रूरता एवं कठिन परिस्थितियों में भी जीवित रहने की क्षमता आदि गुणों का सुन्दर विवेचन किया है साथ ही साथ उन्होंने तपस्वी ऋषियों–मुनियों आदि को भी वन के कष्टपूर्ण जीवन में जीते हुए इसलिए चित्रित किया है, क्योंकि वन्य–जीवन में भौतिक सुख–सुविधाएँ भले ही न हो परन्तु प्राकृतिक साहचर्य से जहाँ जन सामान्य की कठिनाइयों का आभास होता है, वहीं चिन्तन की शुद्ध दिशा भी प्राप्त होती है इसीलिए गोस्वामी जी ने अपने चरितनायक श्रीराम को चौदह वर्षों तक सहर्ष वन्यजीवन जीते हुए दिखाया है।

चित्रकूट प्रसंग में तो श्रीराम को इस प्राकृतिक साम्राज्य का सम्राट तक निरूपित किया है। यहाँ पर वन, पर्वत, यहाँ के निवासी ऋषि–मुनि, कोल–भिल्ल तथा पशु–पक्षियों आदि का सुन्दर समन्वय स्थापित किया गया है –

वन प्रदेश मुनि बास घनेरे । जनु पुर नगर गाउँ गन खेरे ।।
बिपुल बिचित्र बिहग मृग नाना । प्रजा समाजु न जाइ बखाना ।।
खगहा करि हरि बाघ बराहा । देखि महिष बृष साजु सराहा ।।
बयरु बिहाइ चरहिं एक संगा। जहँ तहँ मनहुँ सेन चतुरंगा ।।
झरना झरहिं मत्त गज गाजहिं । मनहुँ निसान बिबिध बिधि बाजहिं ।।
चक चकोर चातक पिक गन । कूजत मंजु मराल मुदित मन ।।
अलिगन गावत नाचत मोरा । जनु सुराज मंगल चहुं ओरा ।।
बेलि बिटप तृन सफल सफूला। सब समाजु मुद मंगल मूला ।।
राम सैल सोभा निरखि भरत हृदयं अति पेमु।
तापस तप फलु पाइ जिमि सुखी सिराने नेमु ।।[1]

चित्रकूट प्रसंग में ही वन्य–परिवेश के अनुकूल भोजन आदि का भी वर्णन मिलता है, जैसे कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं :

(IJDSSH) 2017, Vol. No. 4, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5142; p-ISSN: 2455-7730**

1. ***कंद मूल फल भरि–भरि दोना । चले रंग जुन लूटन सोना ।।***[2]
2. ***कोल किरात भिल्ल बनबासी । मधु सुचि सुंदर स्वादु सुधा सी।।***[3]

भरि भरि परन पुटीं रचि रूरी । कंद मूल फल अंकुर जूरी ।।

इसी प्रकार किष्किंधा के वानर समाज तथा पंचवटी में रहने वाले राक्षसों आदि के स्वभाव, भोजन आदि की विस्तृत भूमिका मिलती है, जो स्वयं में स्वतन्त्र अध्ययन का विषय है।

(ख) प्रकृति की सुरक्षा की आवश्यकता या पर्यावरण–सन्तुलनः *प्रकृति की सुरक्षा की आवश्यकता सदैव रही है। भारत में वैदिक साहित्य से ही प्रकृति के विभिन्न अंगों की सुरक्षा, उनमें सन्तुलन तथा उनसे प्राप्त होने वाली अलौकिक शक्तियों का बखान किया जाता रहा है, जबकि आज विश्व में पृथ्वी, जल, अन्तरिक्ष, वायु आदि तत्वों में क्षोभ उत्पन्न हो चुका है, वैज्ञानिक प्रगति और मानव की भोगवादी प्रकृति ने पर्यावरण का सन्तुलन बिगाड़ दिया है। अब केवल दिखावे के लिए रियोडीजेनरियों के पृथ्वी सम्मेलनों में ओजोन की परत फटने पर चिन्ता प्रकट की जाती है और बारम्बार इस बात पर बल दिया जाता है कि प्रकृति के सम्पूर्ण अंगों के बीच सन्तुलन होना आवश्यक है । इस सन्दर्भ में हम ऋग्वेद के 'विस्वेदेवा सूक्त' के इस मन्त्र पर ध्यान दें –*

ऊँ द्यौ शांतिः अंतरिक्ष ऊँ शांतिः पृथिवी शांतिः आपाः शांतिः वनस्पतयः शांतिः औषधयः शांतिः विश्वेदेवाः शांतिः ब्रहम शांतिः सर्व ऊँ शांतिः शांतिरस्तु शांतिः सामांशांतिरेधि।[4]

गोस्वामी जी बारम्बार ''इति बेद बदन्त न दन्त कथा'' कहकर वेदों का सन्दर्भ ग्रहण करते हैं। यह चित्रकूट के विविध प्रसंगों में तथा राम द्वारा सागर की प्रार्थना में स्पष्ट दिखाई देता है। प्रार्थना पर भी जब सागर प्रकट नहीं होता, तब श्रीराम क्रोध करते हुए दिव्य वाण का संधान करते हैं। उस समय समुद्र

(IJDSSH) 2017, Vol. No. 4, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5142; p-ISSN: 2455-7730**

में भयंकर ज्वाला उठती है और उसमें रहने वाले जीव–जन्तु व्याकुल हो जाते हैं :–

संधानेउ प्रभु बिसिख कराला । उठी उदधि उर अंतर ज्वाला।।
मकर उरग झष मन अकुलाने ।[5]

और इसी के साथ पर्यावरण संरक्षण के प्रयत्न आरम्भ हो जाते हैं और श्रीराम को उस दिव्यास्त्र का प्रयोग समुद्र के उत्तरतटवासी दुष्टों के विनाश के लिए करना पड़ता है । इसी प्रकार के अनेक उदाहरण तुलसी–साहित्य में देखने को मिलते हैं।

(ग) <u>मानव–प्रकृति सम्बन्ध की अनिवार्यता</u>: *प्रारम्भ काल से ही प्रकृति मानव की सहचरी रही है, इस प्रकार मानव और प्रकृति का सम्बन्ध सनातन है। प्रकृति से दूर होते जाने का परिणाम आज की तथाकथित सभ्य पीढ़ी भुगत रही है, किन्तु भारतीय साहित्य में इस सम्बन्ध की महत्ता को सदा ही स्वीकारा गया है। इसलिए भारतीय तत्त्वचिन्तक प्रकृति के साहचर्य में ही रहते आये हैं। विशाल गुरुकुल प्रकृति के अंचल में ही युग–पुरुषों का निर्माण करते आये हैं। यहाँ तक कि कैलाश, अलकापुरी और विभिन्न तीर्थ प्रकृति के अंचल में ही विकसित हुए हैं। कहीं–कहीं तुलसीदास ने सुन्दर अलंकरण के द्वारा अपने पूज्यों में प्रकृति का आरोप किया है –*

देखो देखो, बन बन्यो आज उमाकंत ।
मानो देखन तुमहिं आई रितु बसंत ।।
जनु तनदुति चंपक कुसुम–माल ।
बर बसन नील नूतन तमाल ।।
कल कदलि–जंघ, पद कमल लाल ।
सूचत कटि केसरी, गति मराल ।।
भूषन प्रसून बहु बिबिध रंग । नुपुर किंकिन कलरव बिहंग ।।[6]

(IJDSSH) 2017, Vol. No. 4, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5142; p-ISSN: 2455-7730**

(घ) <u>प्रकृति–चित्रण और शिक्षाः</u> *गोस्वामी जी ने कहीं–कहीं पर एक पंक्ति में प्रकृति का चित्रण किया है, तो दूसरी पंक्ति में उससे प्राप्त होने वाली शिक्षा का संकेत भी। मानस के किष्किंधा काण्ड का वर्षा ऋतु वर्णन इसी प्रकार का है –*

दामिनि दमक रह न घन माही । खल कै प्रीति जथा थिर नाही ।।
बरषहिं जलद भूमि नियराएं। जथा नवहिं बुध बिद्या पाएँ ।।
बूंद अघात सहहिं गिरि कैसे । खल के बचन संत सह जैसे ।।
छुद्र नदी भरि चली तोराई। जस थोरहुँ धन दुल इतराई ।।

X X X X X

खोजत कतहुँ मिलइ नहिं धूरि । करइ क्रोध जिमि धरमहिं दूरी ।।
ससि संपन्न सोह महि कैसी । उपकारी कै संपति जैसी ।।

X X X X X

महावृष्टि चलि फूटि किआरीं । जिमि सुतंत्र भएँ बिगरहिं नारी ।।[7]

यहाँ तक कि पूरा प्रसंग ही प्रकृति–वर्णन और उससे प्राप्त होने वाली शिक्षा से भरा हुआ है।

(च) <u>देशाटन और तीर्थाटन द्वारा प्रकृति की महत्ता का निरूपणः</u> *भारतीय साहित्य में देशाटन और तीर्थाटन का विशेष महत्व है। इसीलिए समाज में उन स्थानों के भ्रमण की एक परम्परा बनी हुई है, जहाँ या तो किसी महापुरुष ने जन्म लिया है या उसका कर्मक्षेत्र रहा है। गोस्वामी जी ने भी अयोध्या, काशी आदि नगरियों के साथ ही चित्रकूट, पंचवटी, हिमालय, रामेश्वरम् आदि अनेक प्रकृतिक स्थलों की महत्ता का बखान करते हुए इन्हे श्रेष्ठ तीर्थ सिद्ध किया है। उन्होंने तो यहाँ तक कहा है –*

धन्य भूमि बन पंथ पहारा । जहँ जहँ नाथ पाउ तुम्ह धारा।।[8]

ध्यान देने की बात है कि इस अर्धाली में प्राकृतिक स्थलों का ही वर्णन हुआ है। चित्रकूट के प्रति तो उन्होंने अनेक स्थलों पर श्रद्धा व्यक्त की है –

(IJDSSH) 2017, Vol. No. 4, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5142; p-ISSN: 2455-7730**

– सब दिन चित्रकूट नीको लागत ।

बरषा ऋतु प्रबेस बिसेष गिरि देखन मन अनुरागत।।[9]

– अब चित, चेति चित्रकूटहि चलु ।

कोपित कलि, लोपित मंगल मगु, विलसत बढ़त मोह–माया–मलु ।।[10]

इसी प्रकार गोस्वामी जी ने नैमिषारण्य, प्रयाग, गंगासागर, द्वारिका, बद्रीनाथ आदि अनेक प्राकृतिक तीर्थों की मुक्तकंठ से महिमा गाई है। आज जब किसी हिन्दू तीर्थ–स्थल पर पहुंचते हैं तो उसकी स्तुति में तुलसीदास द्वारा प्रस्तुत की गई पंक्तियाँ स्थान–स्थान पर दिखाई पड़ती हैं।

गोस्वामी जी ने वस्तुतः प्रकृति को भगवान् की परम शक्ति एवं रचना सिद्ध किया है। इन्होंने जहाँ प्रकृति के विविध रूपों एवं उनके साथ मानवीय सम्बन्धों की विस्तृत भूमिका प्रस्तुत की है वहीं उनके विविध मनोहारी, अलंकरण प्रधान एवं शिक्षाप्रद रूपों का वर्णन करते हुए यह सिद्ध करने का सफल प्रयास किया है कि प्रकृति हमारी आदि शिक्षिका रही है. इसके द्वारा प्राप्त होने वाली शिक्षा से हमें शान्ति और आनन्द की अनुभूति होती है। यह ईश्वर का विशाल शरीर है, तीर्थ माता है, अतः पूज्य है। इसलिए इसकी सर्वविधि सुरक्षा, संरक्षा हमारा दायित्व है । इस दायित्व के निर्वहन में चूक हो जाने के कारण ही आज पर्यावरण का सन्तुलन बिगड़ता जा रहा है और मनुष्य विनाश की ओर बढ़ता चला जा रहा है। हमें सावधान होना ही चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1- *तुलसीदास, रामचरितमानस,* ***2/236/1–4*** *दोहा*

2- *तुलसीदास, रामचरितमानस,* ***2/135/1.***

3- *वही,* ***2/250/1.***

(IJDSSH) 2017, Vol. No. 4, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-5142; p-ISSN: 2455-7730**

4- *ऋग्वेद, विस्वेदेवा सूक्त*

5- *तुलसीदास, रामचरितमानस,* ***14/1–4.***

6- *तुलसीदास, विनयपत्रिका,* ***14/1–4***

7- *तुलसीदास, रामचरितमानस,* ***4/14 से 4/17*** *तक.*

8- *तुलसीदास, रामचरितमानस,* ***2/136/1.***

9- *तुलसीदास, गीतावली,* ***2/50/1.***

10- *तुलसीदास, विनय पत्रिका,* ***24/1.***

REFERENCES

1. Tulsidas, Ramcharitmanas, 2/236/1-4 Doha
2. Tulsidas, Ramcharitmanas, 2/135/1
3. Ibid, 2/250/1
4. Rigveda, Vishvedeva Sukta
5. Tulsidas, Ramcharitmanas, 14/1-4
6. Tulsidas, Vinaypatrika, 14/1-4
7. Tulsidas, Ramcharitmanas, 4/14-17
8. Tulsidas, Ramcharitmanas, 2/136/1
9. Tulsidas, Gitavali, 2/50/1
10. Tulsidas, Vinay Patrika, 24/1